1960-61, under a scheme financed by the Indian Council of Agricultural Research. N'o assistance has been obtained from any world organisation.]

सुपारी के उप-उत्पाद

४४. **श्री नवाबसिंह चौहान :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय केन्द्रीय सुपारी समिति की वित्तीय सहायता से, सुपारी के उप-उत्पादों सम्बन्धी जांचों के बारे में कुछ विश्वविद्यालयों तथा अनुसन्धान संस्थाओं द्वारा जो विभिन्न प्रौद्योगिकीय योजनायें चलाई जा रही थीं उनका क्या परिणाम निकला; और

(ख) सुपारी के किन किन उप-उत्पादों को खोजा जा चुका है; वे किस उपयोग में आयेंगे और कब उनका बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हो सकेगा ?

खाद्य और कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : (क) सुपारी के उप-उत्पादों के उत्तम उपयोग के लिए वन अनुसन्धान संस्था, देहरादून में हुए अनुसन्धान ने प्रदर्शित किया है कि सुपारी के छिलके से ब्राउन रैपिंग पेपर, सख्त गत्ते और प्लास्टिक गत्ते बनाये जा सकते हैं ।

(ख) सुपारी का छिलका और चोगारू (अरिकानट लिकर) उप-उत्पाद हैं । ब्राऊन रैपिंग पेपर, सख्त गत्ते और प्लास्टिक गत्ते के बनाने के लिए सुपारी का छिलका और चमड़ा कमाने के समान के रूप में चोगारू के उपयोग की सम्भावनाओं की खोज की जा रही है । इन उत्पादों के बड़े पैमाने पर उत्पादन और आर्थिक पहलुओं की अभी खोज करनी है ।

BY-PRODUCT OF ARECANUT

44. SHRI NAWAB SINGH CHAU-HAN: Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state:

(a) what is the outcome of the various technological schemes for investigations on the by-products of arecanut, being carried on by some of the universities and Research Institutes with financial aid from the Indian Central Arecanut Committee; and

(b) what by-products of arecanut have been discovered; for what purpose they would be used and by when they are likely to be produced on a large scale?]

f[THE MINISTER OP STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (DR. RAM SUBHAG SINGH): (a) Research being conducted at the Forest Research Institute, Dehra Dur. for the better utilisation of by-products of arecanut has shown that brown wrapping paper, hard boards and plastic boards can be made out of arecanut husk.

(b) Husk of arecanut and chogaru (arecanut liquor) are the by-products. Possibilities are being explored to use arecanut husk for making brown wrapping paper, hard boards and plastic boards and chogaru as a leather tan ning material. Large scale production and economic aspects of these products are yet to be explored.]

लम्बे रेशे वाली कपास की काश्त

४५. **श्री नवाब सिंह चौहान :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सी आइलैंड एंड्रूज किस्म की कपास की काश्त देश के लिये कितने क्षेत्र में की

t[ ] English translation.

जाती है और उस से कुल कितना उत्पादन होता है;

(ख) लम्बे रेशे वाली और किन किन किस्मों की कपास की काश्त की जाती है और कितने कितने क्षेत्र में की जाती है और प्रत्येक से कितना कितना उत्पादन होता है; और

(ग) सरकार लम्बे रेशे वाली किन किन किस्मों की कपास का विकास करने का विचार रखती है और क्या भारतीय केन्द्रीय कपास समिति अब तक सुधरी हुई किस्म की किसी कपास का विकास कर सकी है; और यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

CULTIVATION OF LONG STAPLE COTTON

45. SHRI NAWAB SINGH CHAU-HAN: Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state:

(a) the area under cultivation of Sea Island Andrews variety of cotton in the country and the total quantity of production thereof;

(b) what are the othe,r varieties of long staple cotton that are under cultivation and the area under cultivation together with the quantity of producti'on of each of them; and

(c) the varieties of long staple cotton which Government propose to develop and whether the Indian Central Cotton Committee has so far been able to evolve some improved variety of cotton, and if so, what are the details thereof?]

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : (क) १९६१–६२ में देश में सी आइलैंड एंड्रूज कपास की खेती का क्षेत्र और उसका उत्पादन क्रमशः २९९७.७५ एकड़ और ३१५ गांठें (प्रत्येक ३९२ पौंड की) था ।

(ख) १९६०–६१ में लम्बे रेशे वाली कपास की अन्य किस्मों की खेती, उनका क्षेत्र और प्रत्येक का उत्पादन बताने वाला एक विवरण नत्थी है। १९६१–६२ के ये आंकड़े अभी उपलब्ध नहीं हैं। [देखिये परिशिष्ट ३९ अनुपत्र संख्या ९] ।

(ग) सी आइलैंड एंड्रूज कपास के साथ ही साथ प्रश्न के भाग (ख) में लिखित विवरण में वर्णित समस्त किस्मों को विकसित करने का प्रस्ताव है । विभिन्न राज्यों में भारतीय केन्द्रीय कपास समिति द्वारा वित्तीय सहायता दी गई योजनाओं से अभी तक कपास की ७५ सुधरी किस्मों को विकसित करना सम्भव हो सका है, जोकि पुरानी किस्मों से उपज, श्रेणी और कीटनाशी रोगों के विरोधी और विपरीत पर्यावरण अवस्थाओं में उत्तम थीं । इन में से अब ३९ की खेती के लिए सिफारिश की गई हैं जिनकी एक सूची, जिसमें उनका ब्यौरा भी है, नत्थी है। [देखिये परिशिष्ट ३९, अनुपत्र संख्या १०] ।

t[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (DR. RAM SUBHAG SINGH): (a) The area under cultivation of Sea Island Andrews cotton and the production therefrom in the country was 2,997- 75 acres and 315 bales (each of 392 lbs.) respectively during the year 1961-62.

(b) A statement indicating other varieties of long staple cotton under cultivation, the area under them and the producti'on of each during the year 1960-61 is attached. Similar figures for the year 1961-62 are not yet available. [See Appendix XXXIX, Annexure No. 10.]

(c) All the varieties mentioned in the statement referred to in part (b) of the Question as well as Sea Island Andrews cotton are proposed to be

ft] English translation.

developed. Through the schemes financed by the Indian Central Cotton Committee in the various States, it has so far been possible to evolve 75 improved varieties of cotton which were superior to the old types in yield, quality and resistance to pests, diseases and adverse environmental conditions. Of these, 39 are now recommended for cultivation, a list of which is attached indicating also their details. *[See* Appendix XXXIX, Annexure No. 11.]

रेयन की श्रेणी की लुगदी और बक्सों के गत्ते

४६. **श्री नवाबसिंह चौहान :** क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि भारतीय केन्द्रीय जूट कमेटी के तत्वावधान में तकनीकी अनुसंधानशाला में जो अनुसंधान जूट की टहनियों से रेयन की श्रेणी की लुगदी और बक्सों के लिये गत्ते बनाने का चल रहा था उसमें कहां तक सफलता मिली और क्या इस अनुसंधान के परिणामों को बड़े पैमाने के उत्पादन में प्रयोग किया जा सकता है ?

t [RAYON GRADE PULP AND BOX BOARDS

46. SHRI NAWAB SINGH CHAU-HAN: Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state the amount of success achieved in the research, which was being conducted in the Technological Research Laboratory under the auspices of the Indian Central Jute Committee, for preparing rayon grade pulp and box boards from jute sticks and whether the results of this research can be made use of for large scale production?]

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह): जूट और मेस्ता टहनियों से बक्सों के लिए गत्ते बनाने की विधि का कार्यकारी ब्यौरा पूरा कर लिया गया है और दिलचस्पी रखने वाले अनेक पक्षों को यह तकनीक बता दी गई है। कलकत्ते के दो गत्ते निर्माताओं ने हाल ही में बड़े पैमाने पर जूट की टहनियों से बक्सके लिए गत्ता बनाना आरम्भ कर दिया है ।

जूट की टहनियों से रेयन की श्रेणी की लुगदी से सम्बन्धी तकनीकी अनुसन्धान प्रयोगशाला का कार्य अभी प्रयोगात्मक अवस्था में है ।

HTHE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE (DR. RAM SUBBAG SINGH): Working details of the process of making box board from jute and mesta sticks have been completed and the technique has been explained to a number of interested parties. Two board-manufacturers in Calcutta have recently started making box-board from jute sticks on a large scale.

Technological Research Laboratory's work on the preparation of rayon-grade pulp from jute sticks is still in the experimental stage.]

सिन्धु नदी-क्षेत्र विकास निधि

४७. **श्री विमलकुमार मन्नालाल चौरड़िया :** क्या **सिचाई तथा विद्युत** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सिन्धु नदी-क्षेत्र विकास निधि . भारत सरकार ने कितना धन देना स्वीकार किया है ;

(ख) उक्त रकम के दिये जाने से क्या क्या लाभ प्राप्त होंगे ; और

(ग) अभी तक कुल कितना धन कब कब दिया गया है और अभी कितना कितना धन कब कब देय है ?

t[ ] English translation.